

# रीवा भूगर्भिक संरचना, ऐतिहासिक भौगोलिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य : एक अध्ययन

राजेन्द्र प्रसाद पटेल<sup>1\*</sup>, डॉ. एस. डी. पाण्डेय<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विवि, रीवा (मप्र)

<sup>2</sup> निर्देशक, शासकीय केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज, जिला रीवा (मप्र)

सार - रीवा भूमि की संरचना मूलतः विन्ध्यन तन्त्र की शैल समूहों से हुई है जिनमें ऊपरी एवं निचली विन्ध्यन तन्त्र का विभाजन एक विषम विन्यासी तल द्वारा होता है जो उस काल की अपरदन सतह के रूप में है जबकि इस प्रदेश में जमाव की अपेक्षा अपरदन की प्रधानता रही। प्रदेश की शैल समूहों की उत्पत्ति, विशेषता एवं अश्मवैज्ञानिक प्रकृति के अध्ययन द्वारा न केवल स्थालाकृतिक एवं भूजलीय स्वरूप का ज्ञान होता है अपितु भ्वाकृतिक इतिहास की पुनर्रचना भी हो जाती है। रीवा पठार भारतीय राज्य मध्य प्रदेश में रीवा जिले के एक हिस्से को कवर करता है। रीवा पठार दक्षिण में कैमूर रेंज और उत्तर में विन्ध्य रेंज या बिंज पहाड़ के बीच स्थित है। बिंज पहाड़ के उत्तर में जलोढ़ मैदान हैं जिन्हें उपरीहार कहा जाता है। पठार में रीवा जिले की हुजूर, सिरमौर और मऊगंज तहसील शामिल हैं। दक्षिण से उत्तर की ओर ऊंचाई कम हो जाती है। कैमूर रेंज 450 मीटर (1,480 फीट) से अधिक है। रीवा रियासत की स्थापना बघेल राजपूतों (योद्धा जाति) ने लगभग 1400 में की थी। शहर को 1597 में राज्य की राजधानी के रूप में चुना गया था और ब्रिटिश बघेलखंड एजेंसी (1871-1931) और विन्ध्य प्रदेश राज्य (1948-56) की राजधानी के रूप में भी कार्य किया गया था। रीवा ने 1812 में अंग्रेजों के साथ संधि समझौतों में प्रवेश किया। शहर अन्य शहरों के साथ सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है और अनाज, भवन निर्माण पत्थर और लकड़ी के लिए एक व्यापार केंद्र है।

कुंजीशब्द – रीवा, ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं आर्थिक, परिप्रेक्ष्य

-----X-----

## 1. प्रस्तावना

### सामान्य भूगर्भिक संरचना

अध्ययन क्षेत्र की प्रधान भूगर्भिक संरचना ऊपरी निचले विन्ध्याचल क्रमों पर आधारित है जबकि यहां के आधार तल पर आर्कियन युग की ग्रेनाइट और नीस चट्टानें भी पायी जाती हैं- अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित भूगर्भिक विशेषताओं का गहन अध्ययन करने के उपरान्त हम भूपृष्ठ और जलस्थिति की विस्तृत व्याख्या ही नहीं कर सकते वरन् भ्वाकृतिक इतिहास के अध्ययन के आधार पर संरचनात्मक, भ्वाकृतिक एवं अपवाह तन्त्र की जटिलता की व्याख्या भी कर सकते हैं क्योंकि भूगर्भिक संरचना के आधार पर ही किसी भी क्षेत्र में भूआकारों एवं अपवाहतन्त्र का विकास होता है।

इसीलिए किसी भी प्रदेश के भ्वाकृतिक अध्ययन के लिए उसकी भूगर्भिक संरचना का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि भूगर्भिक संरचना स्थल रूपों के विकास में प्रधान नियंत्रक कारक हैं एवं वह उनमें प्रतिविम्बित होती है। कृषि का सम्बन्ध मिट्टी से होता है और मिट्टी का निर्माण विद्यमान शैलीय संरचनाओं पर आधारित होता है। चट्टानों से विभिन्न प्रकार के खनिज उपलब्ध होते हैं जिनका आर्थिक और औद्योगिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।

अध्ययन क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना विभिन्न भूगर्भिक कालों में घटित घटनाओं के जटिल प्रभावों का परिणाम है जो कि पूर्व केम्ब्रियन युग से आधुनिक युग तक कार्यरत रहे हैं। बलन, भंशन, सम्बलन, उत्थान, अवतलन, अपक्षय और अपरदन एवं प्राप्त पदार्थों के जमाव की क्रियाएं भूगर्भिक कालों में न्यूनाधिक रूप में सक्रिय रही हैं।

## भूगर्भिक संरचना एवं अश्मवैज्ञानिक विशेषताएं

रीवां भूमि की संरचना मूलतः विन्ध्यन तन्त्र की शैल समूहों से हुई है जिनमें ऊपरी एवं निचली विन्ध्यन तन्त्र का विभाजन एक विषम विन्यासी तल द्वारा होता है जो उस काल की अपरदन सतह के रूप में है जबकि इस प्रदेश में जमाव की अपेक्षा अपरदन की प्रधानता रही। प्रदेश की शैल समूहों की उत्पत्ति, विशेषता एवं अश्मवैज्ञानिक प्रकृति के अध्ययन द्वारा न केवल स्थालाकृतिक एवं भूजलीय स्वरूप का ज्ञान होता है अपितु भ्वाकृतिक इतिहास की पुनर्रचना भी हो जाती है।

अध्ययन क्षेत्र की आधारी शैल संरचना आर्कियन युग की ग्रेनाइट-नीश को है जो वैथोलिथ जमावों के रूप में विन्ध्यन तन्त्र की शैलों के नीचे तिरोहित है। ग्रेनाइट-नीश आधार का प्रत्यक्ष संसर्ग निचली विन्ध्यन क्रम से है जो विषम विन्यासी सतह के रूप में इन पर आच्छादित है। इस आधार की रवेदार ग्रेनाइट, नीश एवं डोलेटराइट चट्टानें अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण स्थित सोनघाटी में यत्र-तत्र परिलक्षित हैं जहां विन्ध्यन तन्त्र की शैलों का मोटा आवरण अपरदित हो गया है। उस प्रदेश में आर्कियन युग के बाद की प्रमुख शैल तन्त्र इस प्रकार हैं

### • रोहतास चूना पत्थर

आलोच्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में अत्यन्त पतली पट्टी के रूप में रोहतास क्रम की चूना पत्थर शैलों के दृश्यांश पाये जाते हैं जिनका रंग नीला, स्लेटी और गुलाबी है तथा जिनके संस्तर मोटे टेढ़े-मेढ़े हैं। ये चूना पत्थर शैलें अन्य शैलों के बीच में पतली पट्टी के रूप में पायी जाती हैं जिनकी उत्पत्ति विन्ध्यांचल अन्तः स्थलीय सागर से सम्बन्धित है जबकि कार्बनडाई-आक्साइड के सम्पर्क में जल के आने से कैल्सियम-वाइ-कार्बोनेट की रचना हुई और ये कार्बोनेट एल्गी वनस्पति तथा मूंगा जीवों के द्वारा अपने अस्थिपंजर के निर्माण के लिए ग्रहण किये गये जिनके अवशेष से इन शैलों की रचना हुई। यह शैल समूह सेमरी चट्टान तन्त्र के ही भाग हैं जो निचली विन्ध्यन तन्त्र की सबसे निचली शैल समूह है इसके चूना पत्थर एवं शैल चट्टानें क्रमिक रूप में मिलती हैं।

### • कैमूर शैल तन्त्र

भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग ने अपने सर्वेक्षणों के आधार पर यह प्रमाणित किया है कि कैमूर तन्त्र की शैलों में ऊपरी कैमूर वालुका पत्थर, कैमूर कांग्लोमेरेट तथा क्वार्टजाइट, विजयगढ़ शैल, निचला कैमूर वालुका पत्थर एवं क्वार्टजाइट तथा सुकट शैल क्रमिक रूप से मिलती हैं किन्तु वर्तमान अध्ययन क्षेत्र में केवल वालुका पत्थर और शैल चट्टाने ही पायी जाती हैं। वालुका पत्थर शैलें सूक्ष्म गठन प्रतिरूप की हैं और सभी क्षेत्रों में आसानी से तोड़ी

जा सकती हैं तथा इन्हें तोड़कर छत के लिए पटिया और फुटपाथ के लिए पत्थरों की ईंटें बनायी जाती हैं। हुजूर तहसील के दक्षिणी भाग में वालुका पत्थर एवं शैल के शैल दृश्यांश मूलतः सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। जवा, त्योंथर और मध्यवर्ती भाग में भी ऊपरी कैमूर क्रम की वालुका पत्थर शैलें यत्र-तत्र पायी जाती हैं। इन चट्टानी सतहों का नमन 50 दक्षिण है तथा ये शैलें पीले, भूरे और सफेद रंगों में मिलती हैं इस शैल समूह के ऊपर रीवां वालुका पत्थर का जमाव है। कैमूर वालुका पत्थर में उर्मिचिन्ह प्रचुरता से मिलते हैं।

### • रीवां शैल तन्त्र

रीवां शैल तन्त्र के अन्तर्गत ऊपरी रीवां वालुका पत्थर, झिरीशैल, निचला रीवां वालुका पत्थर, रीवां शैल एवं पन्ना शैल समूह सम्मिलित हैं किन्तु अध्ययन क्षेत्र में रीवां शैल तन्त्र की ऊपरी वालुका पत्थर एवं रीवां शैल के जमाव एवं दृश्यांश ही स्थित है वस्तुतः यह शैल तन्त्र उपरी विन्ध्यन चट्टान तन्त्र का ही एक भाग है जो निचले विन्ध्यन तन्त्र पर विषम विन्यासी रूप में वर्तमान है।

### संरचनात्मक विकास

पश्चिमी रीवां उच्चभूमि का संरचनात्मक इतिहास उस समय से जुड़ा हुआ है जब इस पर अन्तःस्थलीय सागर (विन्ध्यन) का विस्तार था जिसमें विन्ध्यन क्रम की शैलों का निच्छेपण हुआ जो कालान्तर में बलन, भंशन, संबलन, बंकन, उत्थान और अवतलन जैसी विवर्तनिक घटनाओं से प्रभावित हुयी। विन्ध्यन सागर का विस्तार अरावली से सासाराम तक था जिसमें अवसाद निक्षेपण की प्रक्रिया पूर्व कैम्ब्रियन युग में हुयी जो बाद में विवर्तनिक घटनाओं से प्रभावित हुयी।

निचले विन्ध्यन को एक असमविन्यास के सहारे आर्कियन से अलग करते हैं जबकि अध्ययन प्रदेश में अनाच्छादन की प्रक्रियायें निक्षेपण की अपेक्षता तीव्र थीं। यहां आर्कियन चट्टानों में ग्रेनाइट और नीश सदृश कठोर शैलों की प्रधानता है जो वैथोलिथ अंतर्वेधनों के रूप में प्रदेश की आधारी संरचना प्रस्तुत करती है। यह आर्कियन शैलें जिन्हें प्रोटेरोजोइक संरचना भी कहते हैं, यहां की प्रारम्भिक मूल शैल तन्त्र हैं जो धारवाड़ तन्त्र में अंतर्वेधन के फलस्वरूप निर्मित हुयी थी।

सेमरी क्रम की वालुका पत्थर और शैल चट्टानें निचले विन्ध्यन क्रम की हैं जिनमें बलन का सूक्ष्म प्रभाव है जो सममित एवं खुले प्रकार के हैं। यहाँ पर विद्यमान अपनतियाँ अधिकांशतः अनाच्छादित हो चुकी हैं और आधारीय शैलों के शैल दृश्यांश स्पष्टतः दृष्टिगत होते हैं। रोहतास क्रम की चूना पत्थर और

शैल चट्टानों बलन से अल्प मात्रा में प्रभावित हुई हैं। निचले विन्ध्यन में बलन और भंशन की प्रक्रियायें यह स्पष्ट प्रमाणित करती हैं कि निचले विन्ध्यन तन्त्र के जमाव के उपरान्त एक विवर्तनिक घटना हुई थी जिसने इन चट्टानों को प्रभावित किया।

ऊपरी विन्ध्यन और निचले विन्ध्यन के मध्य एक विषम विन्यास तल अवस्थित है जो इस तथ्य को प्रभावित करता है कि निचले विन्ध्यन के जमाव के बहुत बाद से ऊपरी विन्ध्यन का निक्षेपण हुआ तथा अंतर्वर्ती काल में अनाच्छादन की प्रधानता रही जो अपरदन सतह के रूप में विषम विन्यासी तल की रचना हेतु उत्तरदायी है

ऊपरी विन्ध्यन क्रम की शैलें अधिकांशतः क्षैतिज अवस्था में है जो यह प्रमाणित करती हैं कि यह विवर्तनिक संचलनों से बहुत कम प्रभावित हुयी हैं। विन्ध्यन क्रम की शैलों के जमाव के उपरान्त समस्त अध्ययन प्रदेश में क्रिटेशियस युग तक विवर्तनिक घटनाओं का अभाव रहा तथा समस्त प्रदेश अनाच्छादन के लिये खुल गया कार्बोनिफेरस युग में यह प्रदेश दक्षिणी ध्रुव के समीप स्थित होने के कारण हिमानीकरण से प्रभावित हुआ जिससे विभिन्न शैल तन्त्र एवं स्थलाकृतियां अपरदित हो गयी।

कार्बोनिफेरस हिमानीकरण के चिन्ह ऊपरी विन्ध्यन चट्टानों में परिलक्षित होते हैं। अध्ययन प्रदेश क्रिटेशियस युगीन ज्वालामुखी क्रिया से विशेष रूप से प्रभावित नहीं हुआ लगता जबकि उसी समय लावा प्रवाह की बाढ़ के कारण प्राचीन चट्टानों के ऊपर बसाल्ट की एक मोटी परत बिछ गयी यद्यपि भूगर्भ शास्त्रियों का एक वर्ग 11 यह मानता है कि क्रिटेशियस युग में दकन ट्रैप पर जो लावा प्रवाह हुआ था उसकी एक मोटी परत अध्ययन प्रदेश के ऊपर भी बिछ गयी थी जो अब अनावृत्त हो गयी है।

तृतीयक युग में इन्डियन प्लेट का खिसकाव उत्तर दिशा में हुआ जिससे इसका उत्तरी किनारा हिमालय प्रदेश में यूरेशियन प्लेट के नीचे दबने लगा जिसके परिणाम स्वरूप वहां विनाशात्मक प्लेट किनारे की रचना हुयी तथा बलन के कारण हिमालय का पर्वतीकरण हुआ।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

- आर्थिक परिप्रेक्ष्य कृषि एवं उद्योग का अध्ययन
- ऐतिहासिक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन

## 3. जलवायविक विशेषतायें

भौतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपों से प्रभावित करने वाले कारकों में जलवायु सर्व प्रमुख है जो न केवल अपक्षय एवं अपरदन के कारकों के स्वरूप एवं तीव्रता का निर्धारण करती है अपितु भूमि उपयोग के प्रकार एवं उसकी गहनता, फसलों के उत्पादन एवं वितरण, मानव स्वास्थ्य, जीवन यापन के स्वरूप आदि को प्रभावित एवं नियन्त्रित करती है अपक्षय एवं अपरदन की गहनता एवं तीव्रता पूर्णतः तापमान एवं वर्षा के स्थानिक-कालिक वितरण प्रतिरूप पर निर्भर है क्योंकि जलवायु प्रक्रमों को नियन्त्रित करती है तथा प्रक्रम विशिष्ट स्थल रूप समूहों को जन्म देते हैं।

अध्ययन क्षेत्र उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत स्थित है जहां वर्ष में ग्रीष्म, वर्षा एवं शीत ऋतु में स्पष्टतः दृष्टिगत होती हैं यहां वर्षा की अनिश्चितता रहती है क्योंकि वह यहां मानसूनी पवनों द्वारा होती है तथा वर्षा काल के चार माह तक सीमित है ग्रीष्म ऋतु का विस्तार मार्च से जून तक वर्षा ऋतु की अवधि मध्य जून से अक्टूबर तक तथा शीत ऋतु का विस्तार नवम्बर से फरवरी तक रहता है यहां जुलाई के महीने में सर्वाधिक वर्षा होती है ग्रीष्म काल में प्रदेश अत्यधिक उच्चतम हो जाता है तथा कहीं-कहीं तापमान 48° सेन्टीग्रेड तक पहुँच जाता है

जबकि शीतकाल में पर्याप्त ठंडा हो जाता है तथा तापमान गिरकर 3.5° सेन्टीग्रेड तक नीचे आ जाता है अप्रैल से मई तक उच्च तापमान के कारण भौतिक अपक्षय की प्रधानता रहती है जबकि जून से अक्टूबर तक के वर्षा काल में उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता एवं पर्याप्त वर्षा के कारण रासायनिक अपक्षय एवं जलीय प्रक्रम अधिक सक्रिय रहते हैं नवम्बर से मार्च तक का काल मानव स्वास्थ्य एवं क्रियाओं की दृष्टि से आदर्श रहता है क्योंकि इस काल में तापमान एवं सापेक्षित आर्द्रता निम्न रहते हैं जो कृषि एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यों में सर्वथा अनुकूल हैं शीतकाल में निम्न तापमान, निम्न आर्द्रता एवं शुष्क मौसम के कारण जलीय प्रक्रम लगभग स्थगित रहता है तथा अपक्षय भी न्यून होता है।

### • जलवायु

रीवा में ठंड, धुंध भरी सर्दियाँ, तेज गर्मी और उमस भरे मौसम के साथ आर्द्र उपोष्णकटिबन्धीय जलवायु होती है। ग्रीष्मकाल मार्च के अंत में शुरू होता है और जून के मध्य तक चलता है, औसत तापमान 30 ° C ¼86 ° F½ के आसपास होता है, मई में गर्मियों के चरम के साथ, जब उच्चता नियमित रूप से 45 ° C ¼104 ° F½ से अधिक हो जाती है। मानसून जून के अंत में शुरू होता है और सितंबर के अंत में समाप्त होता है। इन महीनों

में लगभग 40 इंच (1025 मिमी) वर्षा होती है। औसत तापमान लगभग 25 ° C ¼77 ° F½ है और आर्द्रता काफी अधिक है। सर्दी शुरू होने पर अक्टूबर के अंत तक तापमान फिर से बढ़ जाता है, जो मार्च के शुरू तक रहता है। रीवा में सर्दियाँ लगभग 15 ° C ¼58 ° F½ औसत तापमान और थोड़ी बारिश के साथ ठंडी और धुंधली होती हैं। जनवरी में सर्दियों की चोटियां जब तापमान कुछ रातों पर ठंड के करीब गिर सकता है। कुल वार्षिक वर्षा लगभग 1128 मिमी 44 इंच) है।

#### • तापमान

अध्ययन क्षेत्र उपोष्ण कटिबन्धीय प्रदेश के अन्तर्गत स्थित होने के कारण अर्द्ध शुष्क तापमान की दशाओं का प्रतिनिधित्व करता है जिसका औसत वार्षिक तापमान 24.81° सेन्टीग्रेट है (चित्र संख्या 1.4 अ, 1.4 ब तथा तालिका संख्या 1.2)। वर्ष का सबसे ठंडा माह जनवरी है जिसका औसत तापमान 15.8° सेन्टीग्रेट है तथा सबसे गर्म माह मई-जून है जिसका औसत तापमान 32.7° सेन्टीग्रेट है ग्रीष्मकाल में तापमान 46° सेन्टीग्रेट से भी ऊपर हो जाता है जिसमें तापीय विक्षोभों की प्रधानता रहती है जबकि शीतकाल में तापमान 7° सेन्टीग्रेट से 27° सेन्टीग्रेट के मध्य रहता है तथा पाला की प्रधानता रहती है सम्पूर्ण प्रदेश में मध्यम वेग की हवायें वर्ष के अधिकांश काल तक पश्चिम से पूर्व की दिशा में प्रवाहित होती हैं।

अर्द्ध शुष्क मानसूनी जलवायु स्थानीय मौसमी पवनों के प्रचलन, नग्न चट्टानी सतह की प्रधानता एवं उच्चावचीय विषमता के कारण यहां दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर अधिक रहता है। मई एवं जून के उष्ण-शुष्क काल में औसत दैनिक अधिकतम तापमान 45° सेन्टीग्रेट तक पहुँच जाता है जिसमें पश्चिम से चलने वाली स्थानीय लू के कारण अचानक वृद्धि हो जाती है जबकि न्यूनतम दैनिक औसत तापमान दिसम्बर एवं जनवरी में अंकित किया जाता है जो शीतलहर के प्रवाहित होने पर 3.5° सेन्टीग्रेट तक गिर जाता है।

जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर के वर्षा काल के उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता एवं अत्यधिक वर्षा की दशाएं रासायनिक अपक्षय एवं जलीय अपरदन के लिए आदर्श परिस्थितियां प्रस्तुत करती हैं क्योंकि इस काल में तापमान 320 सेन्टीग्रेट से 36° सेन्टीग्रेट के मध्य रहता है जबकि मार्च, अप्रैल एवं मई का ग्रीष्म काल 35° सेन्टीग्रेट से 45° सेन्टीग्रेट के उच्च तापमान तथा न्यूनतम वर्षा के कारण भौतिक अपक्षय एवं वायु प्रक्रमों की सक्रियता हेतु सर्वोपयुक्त हैं।

#### • वर्षा

जलवायविक तत्वों में वर्षा का विशिष्ट स्थान होता है क्योंकि इसी के अनुसार रासायनिक अपक्षय एवं जलीय प्रक्रमों की प्रकृति एवं गहनता निश्चित होती है। अध्ययन क्षेत्र में वर्षा मानसूनी हवाओं द्वारा सम्पन्न होती है जो अत्यधिक अनिश्चित तथा अनियमित है। वर्षा ऋतु जून के अन्तिम सप्ताह से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक रहती है जब यहां की अधिकांश वर्षा प्राप्त होती है। यहां कभी-कभी वर्षा समय से पहले प्रारम्भ होकर समय से पूर्व समाप्त हो जाती है तथा कभी-कभी यह प्रारम्भ होकर बन्द हो जाती है।

#### 4. मृदा प्रकारात्मकता

मृदा संसाधन कृषि आधारित जनसंख्या की रीढ़ के रूप में होती है एवं कृषि प्रधान क्षेत्रों में जनसंख्या के घनत्व तथा मृदाउपजाऊपन में घनिष्ठ सहसम्बन्ध पाया जाता है (बी. बी. सिंह, 1979)। मिट्टी ने जनसंख्या की गत्यात्मकता को निकट से प्रभावित किया है। वस्तुतः मिट्टियां भूतल के वह विखण्डित एवं असंगठित पदार्थ हैं जो खनिज एवं जैवीय तत्वों द्वारा निर्मित विभिन्न मोटाई की परतों या मंडलों में स्थित होती हैं तथा जो अपने पैतृक पदार्थों से आकारिकीय, भौतिक, रासायनिक, खनिजीय एवं जैवीय विशेषताओं के अनुसार भिन्न होती हैं (जफी, 1949)। किसी भी प्रदेश की मिट्टियों की उत्पत्ति एवं विकास में भौतिक, रासायनिक एवं जैवीय प्रक्रमों का योगदान होता है क्योंकि भूपरपटी की विखण्डित चट्टानों की वह पतली सतह जिसकी रचना अपक्षय के भौतिक और रासायनिक प्रक्रमों के साथ-साथ विभिन्न जैवीय प्रक्रमों के संयोग से होती है मिट्टी कहीं जाती है (होम्स, 1978)।

अध्ययन क्षेत्र एक अति प्राचीन दृढ़ भूखण्ड के रूप में रहा है जिस पर विभिन्न भौतिक, रासायनिक एवं जैवीय प्रक्रमों ने विभिन्न भूगर्भिक कालों में चट्टानों का विघटन एवं वियोजन किया है जिसकी परिणति यहां की मिट्टियों के रूप में हुयी है। वस्तुतः यहां की अधिकांश मिट्टियां स्वस्थानिक (जोनल) हैं जिनका निर्माण आधार पर चट्टानों के विघटन एवं वियोजन से हुआ है जिसके फलस्वरूप यहां की मिट्टियों में आधार पर स्थित पैतृक शैलों की विशेषतायें मिलती हैं केवल नदी वेसिनो में ही जलोढ़ मिट्टियों का जमाव मिलता है। रासायनिक संरचना खनिजों की विशेषता, मृदा के स्वरूप एवं अवस्थिति के आधार पर यहां की शैलों को निम्न प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते हैं। मिट्टी इत्यादि केन घाटी रीवा पठार को सतना पठार से अलग करती है। समतलता के कारण, उन्हें उच्च मैदान भी कहा जा सकता है। रीवा पठार का केवल दक्षिणी भाग पहाड़ी है। दक्षिण-पश्चिम में रेहली से उत्तर-पूर्व में सतना तक का रीवा पठार प्लेइस्टोसिन और हाल के समय के जलोढ़ से ढंका है।

- **भूरी बलुई जलोढ़ मिट्टी**

बलुई जलोढ़ मिट्टियां टॉस, वेलन और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाये गये अवसाद द्वारा निर्मित हैं जिनका रंग हल्का भूरा से गहरा भूरा है। इस प्रकार की मिट्टियां टॉस, बेलन एवं उसकी सहायक नदियों के मैदानी भागों में अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में पायी जाती है जिनकी मोटाई 10 मीटर से 30 मीटर तक मिलती है यह अधिक उपजाऊ मिट्टियां हैं जिन पर कृषि कार्य सरलता से सम्पन्न किया जा सकता है। इनमें खनिज तत्वों की अधिकता है किन्तु ह्यूमस की कमी है इन मिट्टियों में सामान्यतः नाइट्रोजन की कमी होती है तथा फास्फोरस, पोटैश एवं जैवीय तत्वों की बहुलता मिलती है।

- **जलग्राही महीन बजरी युक्त मिट्टी (हाइड्रोमॉर्फिक मिट्टी)**

जलग्राही महीन बजरी युक्त मिट्टियां उत्तल ढाल वाले क्षेत्रों में पायी जाने वाली मिट्टियां हैं जो मुख्यतः रीवां कगार क्षेत्र में पायी जाती हैं इन मिट्टियों की मोटाई उच्च भागों में 80 सेमी0 एवं निम्न भागों में 200 सेमी0 तक पायी जाती है इन मिट्टियों में महीन कणों के साथ बजरी का भी मिश्रण मिलता है।

- **स्वपोषित तीव्र ढाल की मिट्टी (आटोमॉर्फिक मिट्टी)**

स्वपोषित प्रकार की मिट्टियां रीवां कगार क्षेत्र में मुख्य रूप से चट्टानों के घर्षण से उत्पन्न हुये चूर्ण द्वारा निर्मित हैं। कगार क्षेत्र में इन मिट्टियों की 10 सेमी0 से 50 सेमी0 की पतली परत पायी जाती है। वास्तव में स्वपोषित मिट्टियों का निर्माण अपरदनात्मक क्रिया का प्रतिफल है।

- **शुष्क तीव्र ढाल की मिट्टी**

शुष्क तीव्र ढाल की मिट्टी रीवां कगार क्षेत्र एवं नैना तथा ओडा की सहायक नदियों के वेसिन क्षेत्र में पायी जाती है। इन मिट्टियों में उत्पादन क्षमता बहुत कम होती है शुष्क तीव्र ढाल की मिट्टियों का निर्माण बड़े-बड़े शैल खण्डों के टूटने से होता है।

## 5. वानस्पतिक पर्यावरण

किसी भी भूभाग की वनस्पति वहां की जलवायु के विभिन्न तत्वों विशेष कर तापक्रम एवं वर्षा, मिट्टी और भूपृष्ठ के भूगर्भिक इतिहास का प्रतिफल होती है जलवायु की दशायें वनस्पतियों के वितरण और प्रकार को पूर्णतः प्रभावित करती हैं वनस्पतियों की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र धनी है क्योंकि यहां तीव्र चट्टानी सतह, तीव्र ढाल, कगार सतह आदि के कारण कृषि कार्य कठिन है एवं वन

विनाश से पर्याप्त क्षेत्र बचे रह गये हैं। रीवां कगार क्षेत्र, कैमूर उच्च भूमि एवं वेलन की सहायक नैना एवं उसकी सहायक नदियों का क्षेत्र मुख्य रूप से सघन वनस्पतियों से आच्छादित है। यहां के वनों में तेन्दू, बांस, खैर, टीक, अर्जुन आदि के वृक्ष एवं आम, जामुन, महुआ, नीम तथा पहाड़ी भागों में अन्य छोटी-छोटी कटीली झाड़ियां पायी जाती हैं।

अध्ययन क्षेत्र में घनी वनस्पतियों एवं बड़े-बड़े जंगलों के क्षेत्र मुख्य रूप से कैमूर उच्चभूमि एवं रीवां कगार क्षेत्र में विद्यमान हैं जिनमें गोविन्दगढ आरक्षित वन, गुढ़ आरक्षित वन, मन्द आरक्षित वन सिरगो अरक्षित वन, पुरवा आरक्षित वन, गोडा पहाड़ आरक्षित वन, सोहागी आरक्षित वन एवं त्यौंथर आरक्षित वन प्रमुख हैं अध्ययन क्षेत्र में 140 मीटर से 300 मीटर एवं 500 मीटर से 700 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सघन वनस्पतियों का विस्तार पाया जाता है क्योंकि इन्हीं ऊंचाइयों पर रीवां कगार एवं कैमूर उच्चभूमि की स्थिति है सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क एवं मानसूनी प्रकार की वनस्पतियां मिलती हैं क्योंकि यहां वर्षाकाल के तीन महीनों में ही वर्षा होती है तथा शेष काल शुष्क ही समाप्त हो जाता है इसीलिए यहां बड़े वृक्षों के साथ झाड़ियां उगती हैं। यहां की वनस्पतियों को निम्न प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं।

## 6. ऐतिहासिक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य

रीवा या रीवा शहर, उत्तर पूर्वी मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत का भी नाम था। यह एक विस्तृत जलोढ़ मैदान पर समुद्र तल से लगभग 1,024 फीट (312 मीटर) की ऊंचाई पर स्थित है जो विंध्य रेंज के पठार का एक हिस्सा है

रीवा रियासत की स्थापना बघेल राजपूतों (योद्धा जाति) ने लगभग 1400 में की थी। शहर को 1597 में राज्य की राजधानी के रूप में चुना गया था और ब्रिटिश बघेलखंड एजेंसी (1871-1931) और विंध्य प्रदेश राज्य (1948-56) की राजधानी के रूप में भी कार्य किया गया था। रीवा ने 1812 में अंग्रेजों के साथ संधि समझौतों में प्रवेश किया।

शहर अन्य शहरों के साथ सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है और अनाज, भवन निर्माण पत्थर और लकड़ी के लिए एक व्यापार केंद्र है। कपड़े की बुनाई और लकड़ी की नक्काशी महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग हैं। यह शहर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय (1968 में स्थापित) की सीट है, जहां शहर में एक मेडिकल स्कूल सहित कई संबद्ध कॉलेज हैं। आसपास के क्षेत्र को टॉस नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा पानी पिलाया जाता है। चावल, गेहूं, तिलहन, बाजरा और मक्का (मक्का) इस क्षेत्र की

प्रमुख फसलें हैं। इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वनाच्छादित है, जिसमें बहुमूल्य लकड़ी और लाख उपजाई जाती है (जिस पर से शैलैक बनाया जाता है)।

जिले का नाम रीवा शहर से है, जो जिला मुख्यालय है, जो नर्मदा नदी का दूसरा नाम है। अब जिले में शामिल क्षेत्र शाही मौर्य वंश के पास थे, जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में शासन करते थे। यह क्षेत्र 9 वीं से 12 वीं शताब्दी के अंत तक कलचुरियों के अंतर्गत आया। 13 वीं शताब्दी में, सुल्तान अलाउद्दीन के भाई उलूग खान ने बघेला राजा को पूर्व में क्षेत्र में भगा दिया, जहाँ उन्होंने रियासत की स्थापना की थी। यह राजवंश अंतिम उत्तराधिकारी मार्तंड सिंह तक जारी रहा, 1947 में डोमिनियन ऑफ इंडिया के लिए निरंकुश और प्रशंसित शासन। वर्तमान रीवा जिला 1950 में अस्तित्व में आया जब प्रांत और राज्यों के आदेश (एन्क्लेव का हस्तांतरण) को लागू किया गया था। अगस्त 1947 से पहले, जिला, पूर्व रीवा राज्य के रघुराजनगर तहसील के साथ, उस राज्य के उत्तर रीवा जिले के अनुरूप था।

## 7. आर्थिक परिप्रेक्ष्य कृषि एवं उद्योग

रीवा जिले की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। जातिवाद एवं सामंतवाद के प्रभाव में यहाँ गरीबी की समस्या अपने गंभीर स्वरूप में विद्यमान है। मध्यप्रदेश के पूर्वोत्तर में स्थित रीवा जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 6,28,745 हैक्टेयर है। प्रशासनिक दृष्टि से जिले को 07 तहसीलों एवं 9 विकास खंडों में बांटा गया है। इसकी सात तहसीलें-हुजूर, त्योंथर, सिरमौर, मऊगंज, हनुमना, गुढ एवं रायपुर (कर्चुलियान) हैं। जिले का अधिकांश भाग पहाड़ी एवं पठारी है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से त्योंथर तहसील अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ है। जिले में दक्षिण-पश्चिम मानसून हवाओं से वर्षा होती है। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 1,270 मि.मी. है। रीवा जिला 85,289 हेक्टेयर में वनाच्छादित है जो इसके कुल क्षेत्रफल का 13.56 प्रतिशत है। तेंदूपत्ता, आवला, महुआ यहाँ की प्रमुख वनोपज है। खनिज संसाधनों की दृष्टि से रीवा जिला सामान्य है।

यहाँ मुख्यतः चूना पत्थर, बाक्साइट, मुरम, रेत फर्शी पत्थर, आदि प्राप्त होते हैं। उद्योगों में यहाँ मुख्य रूप से सीमेन्ट उद्योग ही विकसित हुआ है। जल संसाधन की दृष्टि से रीवा जिला समृद्ध है। 2011 की जनगणना के अनुसार रीवा जिले की कुल जनसंख्या 19,73,306 है जो मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या का 3.27 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या में से पुरुष 51.52 प्रतिशत एवं महिलाएँ 48.48 प्रतिशत हैं। कुल जनसंख्या का 16.25 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में तथा शेष 83.75 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति एवं जनजाति का प्रतिशत क्रमशः 15.6 एवं 129 है। जिले में साक्षरता का प्रतिशत

62.33 है। पुरुष साक्षरता 75.6 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 47.6 प्रतिशत है। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता 78 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 59.2 प्रतिशत है। जिले की कार्यशील जनसंख्या में प्राथमिक गतिविधियों से जुड़े व्यक्ति अधिक हैं।

रीवा पठार भारतीय राज्य मध्य प्रदेश में रीवा जिले के एक हिस्से को कवर करता है। रीवा पठार दक्षिण में कैमूर रेंज और उत्तर में विंध्य रेंज या बिंज पठार के बीच स्थित है। बिंज पठार के उत्तर में जलोढ़ मैदान हैं जिन्हें उपरीहार कहा जाता है। पठार में रीवा जिले की हुजूर, सिरमौर और मऊगंज तहसील शामिल हैं। दक्षिण से उत्तर की ओर ऊंचाई कम हो जाती है। कैमूर रेंज 450 मीटर (1,480 फीट) से अधिक है। तोंथर के जलोढ़ मैदान लगभग 100 मीटर (330 फीट) के आसपास हैं। प्लेटो की एक श्रृंखला कैमूर रेंज के साथ चलती है। इन फ्लुवियल प्लेटो में, उतरते पठार की एक श्रृंखला शामिल है, जो पश्चिम में पन्ना पठार से शुरू होती है, उसके बाद भांडेर पठार और रीवा पठार और पूर्व में रोहतास पठार के साथ समाप्त होता है।

## 8. उपसंहार

रीवा भूमि की संरचना मूलतः विन्ध्यन तन्त्र की शैल समूहों से हुई है जिनमें ऊपरी एवं निचली विन्ध्यन तन्त्र का विभाजन एक विषम विन्यासी तल द्वारा होता है जो उस काल की अपरदन सतह के रूप में है जबकि इस प्रदेश में जमाव की अपेक्षा अपरदन की प्रधानता रही। प्रदेश की शैल समूहों की उत्पत्ति, विशेषता एवं अश्मवैज्ञानिक प्रकृति के अध्ययन द्वारा न केवल स्थालाकृतिक एवं भूजलीय स्वरूप का ज्ञान होता है अपितु भ्वाकृतिक इतिहास की पुनर्रचना भी हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र की आधारी शैल संरचना आर्कियन युग की ग्रेनाइट-नीश को है जो वैथोलिथ जमावों के रूप में विन्ध्यन तन्त्र की शैलों के नीचे तिरोहित है। ग्रेनाइट-नीश आधार का प्रत्यक्ष संसर्ग निचली विन्ध्यन क्रम से है जो विषम विन्यासी सतह के रूप में इन पर आच्छादित है। प्रदेश की शैल समूहों की उत्पत्ति, विशेषता एवं अश्मवैज्ञानिक प्रकृति के अध्ययन द्वारा न केवल स्थालाकृतिक एवं भूजलीय स्वरूप का ज्ञान होता है अपितु भ्वाकृतिक इतिहास की पुनर्रचना भी हो जाती है। रीवा पठार भारतीय राज्य मध्य प्रदेश में रीवा जिले के एक हिस्से को कवर करता है। रीवा पठार दक्षिण में कैमूर रेंज और उत्तर में विंध्य रेंज या बिंज पठार के बीच स्थित है। बिंज पठार के उत्तर में जलोढ़ मैदान हैं जिन्हें उपरीहार कहा जाता है। पठार में रीवा जिले की हुजूर, सिरमौर और मऊगंज तहसील शामिल हैं। दक्षिण से उत्तर की ओर ऊंचाई कम हो जाती है। कैमूर रेंज 450 मीटर (1,480 फीट) से अधिक है। रीवा रियासत की स्थापना बघेल राजपूतों (योद्धा जाति) ने लगभग 1400 में की थी। शहर

को 1597 में राज्य की राजधानी के रूप में चुना गया था और ब्रिटिश बघेलखंड एजेंसी (1871-1931) और विंध्य प्रदेश राज्य (1948-56) की राजधानी के रूप में भी कार्य किया गया था।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. बी.आर. नायडू ; 2021द्ध श्क्षम वित्त एवं उद्यमिता विकासश् महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय , चित्रकूट ई-मेल- cmclpdpcourse@gmail.com, पृष्ठ संख्या 12- 50.
2. श्रीवास्तव, अजय कुमार ( 2019) "योजना काल में भारत के उद्यमिता विकास " में विटिया संस्थान की भूमिका एक विश्वात्मक अध्ययन , <http://hdl-handle-net/10603/171220>.
3. अजय कुमार ( 2019) "ग्रामीण उद्यमिता " विभूति खंड, हाई कोर्ट गेट नंबर 7 के समीप, गोमती नगर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), पृष्ठ संख्या 40.
4. जाँय के कोबिया ( 2015) काउंटी स्तर पर ग्रामीण उद्यमिता विकास की एक जांचरू साउथ डकोटा , साउथ डकोटा स्टेट यूनिवर्सिटी में ग्रामीण समुदायों के लिए अवसर।
5. फ्रांसिस ओ न्वांकवो चिनवे एस ओकेके ( 2016) नाइजीरिया में ग्रामीण उद्यमिता और ग्रामीण विकास, अफ्रीका की लोक सेवा वितरण और प्रदर्शन समीक्षा, पीपी 1-7.
6. जयदत्त, एस। (2017) भारत में ग्रामीण उद्यमिता की प्रमुख चुनौतियां और समस्याएं। पृष्ठ संख्या 130.
7. कुम्भर, वी.एम. (2013) ग्रामीण भारत में उद्यमिता के कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे। यूरोपीय अकादमिकअनुसंधान, पृष्ठ संख्या 110.
8. शांति, एन., और कुमार, एस. आर. (2011) भारत में उद्यमिता चुनौतियां और अवसर। बॉनफ्रिंग इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट साइंस , 1 (स्पेशल इश्यू इनांगरल स्पेशल इश्यू), पृष्ठ संख्या 14-16।
9. गौतम, आर.के., और मिश्रा , के. (2016) भारत में ग्रामीण महिला उद्यमिता पर अध्ययनरू मुद्दे और चुनौतियां। इंट. जे. एपल. रेस , 2, पृष्ठ संख्या 33-36।
10. उषा दास ( 2021)श् ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावाश् souvik-uash@visva&bharati'ac'insha24-das@gmail-com½ पृष्ठ संख्या 30.
11. पर्टिन, टी और गैनन , ए ( 1997) ष्टुद्यमिता के माध्यम से ग्रामीण विकासश् , चाय द्वारा संकलित और संपादित , आरईयू तकनीकी श्रृंखला 41, यूरोप के लिए एफएओ क्षेत्रीय कार्यालय , संयुक्त राष्ट्र के एफएओ, रोम।
12. डुआर्टे, एन एंड डिनजिज , एफ ( 2011) श्स्थानीय विकास में फर्मों और उद्यमिता की भूमिकाश् क्षेत्रीय विज्ञान के रोमानियाई जर्नल। 5 (1), पृष्ठ संख्या 54-69।
13. कुमार, एस.वी. (2016) श्उद्यमिता के माध्यम से भारत में ग्रामीण विकासरू समस्याओं और चुनौतियोंश् का एक सिंहावलोकन। अन्वेषना , 6(2), पृष्ठ संख्या 32-52

---

### Corresponding Author

#### राजेन्द्र प्रसाद पटेल\*

शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विवि, रीवा (मप्र)